B.A (Hons) part-2.

Subject-Hindi

Paper-(composition 100marks)

UG

Topics- कुरुक्षेत्र का कथासार लिखें।

Dr.Prafull kumar,HOD, Hindi Department RRS College Mokama PPU Patna

कुरुक्षेत्र राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित विचारात्मक काव्य है, यह मानवतावाद के विस्तृत पटल पर लिखा गया आधुनिक काव्य महाभारत युद्ध की कथा वस्तु पर आधारित है । इसमें कवि ने मानवीय संघर्षरत जीवन की समस्या अधिकार, अहंकार अज्ञानता का विश्लेषण किया है। युद्ध से सम्बंधित अनेक पहलुओ पर विचार विनिमय करते हुए कवि ने इस काव्य को रच डाला है। इसमें युद्ध को मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ कहा गया है। युद्ध को निन्दित और क्रूर कर्म बतलाया गया है। इस प्रकार के युद्धों का जिम्मेदार उन लोगों को ठहराया जाता है जो निर्णायक होते हैं, जिनके इसारे पर सारा समाज चलता है। परंपरावादी कवियों से अलग दिनकर जी ने सच्चे अर्थों में 'युगचारण' तथा 'जनकवि' होने की मर्यादा प्राप्त की है। राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक चेतना एवं राजनीतिक सजगता का परिचय दिया है-

" वह कौन रोता है वहाँ इतिहास के अध्याय पर

जिसमें लिखा है नौजवानों के लहू का मोल है

जो आप तो लड़ता नहीं कटवा किशोरों को मगर

आश्वस्त होकर सोचता सोनित बहा

लेकिन गई बच लाज सारे देश की।" ("1) प्रथम सर्ग पृष्ठ 5 कुरुक्षेत्र

प्रस्तुत काव्य में दिनकर जी ने एक साथ युद्ध के कारण ---- युद्ध की विभिषिका, --- युद्घ के परिणाम-उसके शमन के उपाय पर विचार किया है।सामाजिकों की युद्ध के प्रति सामान्य मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है-

“ सहज ही चाहता कोई नहीं लड़ना किसी से,;

किसी को मारना अथवा स्वयं मरना किसी से ;

नहीं दु:शान्ति को भी तोड़ना नर चाहता है;

जहाँ तक हो सके, निज शान्ति प्रेम निबाहता है ।पृष्ठ 38 चतुर्थ सर्ग।या फिर

“रुग्ण होना चाहता कोई नहीं, रोग लेकिन आ गया जब पास हो ,तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या? शमित होगा वह नहीं मिष्टान्न से।” पृष्ठ 17 द्वितीय सर्ग कुरुक्षेत्र।

फिर मनुष्य का अपने प्रति कर्त्तव्य क्या है। क्या कायरों की तरह अपने अस्तित्व की रक्षा करना छोड़ कर युद्ध करने से मुंह मोड़ ले।

“ छीनता हो स्वत्व कोई, और तू त्याग- तप से काम ले यह पाप है।

पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।“” पृष्ठ 18 द्वितीय सर्ग

समाज में शांति के लिए सामाजिक ,आर्थिक राजनीतिक समानता की अनिवार्य आवश्यकता है।

‘ शान्ति नहीं तब तक, जब तक सुख भाग न नर का सम हो,

नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो।” पृष्ठ 25 तृतीय सर्ग

वस्तुतः युद्ध मे यह कहना कि जा मैंने क्षमा किया और युद्ध छोड़ देना उचित नहीं है।क्योंकि सभी क्षमा करने मे सक्षम हो नहीं सकते हैं-

“सहनशीलता, क्षमा दया को तभी पूजता जग है,

बल का तर्क दमकता उसके पीछे जब जगमग है। पृष्ठ 29

“ शान्ति-बीन तब तक बजती है नहीं सुनिश्चित सुर में,

स्वर की शुद्ध प्रतिध्वनि जब तक उठे नहीं उर-उर में । पृष्ठ 34 तृतीय सर्ग। युद्ध के दोनों दल़ो मेसे एक दल तो अपने अधिकार और कर्त्तव्य की रक्षा करने के कारण पाप का भागीदार नहीं होता है परंतु दिनकरजी की दृष्टि में दूसरा पक्ष पाप का भागीदार होता है।-

“पापी कौन मनुज से उसका न्याय चुराने वाला

या कि न्याय खोजते विघ्न का सीस उड़ाने वाला? पृष्ठ 36 तृतीय सर्ग

युद्ध और शांति के अन्तर द्वन्द्वों से मुक्त होकर मनुष्य क्या करें, इसका मार्गदर्शन करते हुए कवि ने बताया है-

“सबसे बड़ा धर्म है नर का सदा प्रज्वलित रहना,

दाहक शक्ति समेट स्पर्श भी नहीं किसी का सहना। पृष्ठ 49 चतुर्थ सर्ग

निकट भविष्य में धर्म का शांति का साम्राज्य स्थापित नहीं होता देखा है-

“धर्म का दीपक , दया का दीप,कब जलेगा, कब जलेगा

विश्व में भगवान ? कब सु कोमल ज्योति से अभिसक्त हो,

सरस होंगे जली-सूखी रसा के प्राण ?

है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धार,

पर नहीं अब तक सुशीतल हो सका संसार।

भोग-लिप्सा आज भी लहरा रही उद्धाम,बह रही असहाय नर की भावना निष्काम। पृष्ठ 77 षष्ठ सर्ग । औद्योगिक विकास की ओर आकर्षित मानव को सचेत किया है-

रसवती भू के मनुज का श्रेय, यह नहीं विज्ञान,

विद्या-बुद्धि यह आग्नेय;

विश्व -दाहक,मृत्यु-वाहक,सृष्टि का संताप,

भ्रान्त पथ पर अन्य बढ़ते ज्ञान का अभिशाप। पृष्ठ 83षष्ठ सर्ग

“सावधान, मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार,

तो इसे दे फेंक तज कर मोह स्मृति के पार ।पृष्ठ 86

संसार का अस्तित्व वीर योद्धा ही बचाते हैं। मेहनत करनेवाले ही इसे कायम रखने वाले हैं।डरपोक शक्ति हीन लोगों ने इसे सुरक्षित नहीं रखा है-

“ मही नहीं जीवित है मिट्टी से डरने वालों से,

जीवित है वह उसे फूंक सोना करने वालों से।

ज्वलित देख पंचाग्नि जगत् से निकल भागता योगी।

धुनि बनाकर उसे तापता अनासक्त रसभोगी।“ पृष्ठ 86 सप्तम सर्ग

जब तक मनुज- मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,

शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा ।पृष्ठ 91 सप्तम सर्ग । ऐसी स्थिति नहीं हो सकती है कि मानव अपनी शक्ति को कम समझकर हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहे-

“सब हो सकते तुष्ट, एक- सा

सब सुख पा सकते हैं ,

चाहे तो, पल में धरती को स्वर्ग बना सकते हैं ।”पृष्ठ 93 सप्तम सर्ग

दुर्लभ नहीं मनुज के हित, निज वैयक्तिक सुख पाना,

किन्तु कठिन है कोटि-कोटि मनुजों को सुखी बनाना।

एक पंथ है छोड़ जगत को अपने में रम जाओ,

खोजो अपनी मुक्ति और निज को ही सुखी बनाओ ।------

जिस तप से तुम चाह रहे पाना केवल निज सुख को, कर सकता है दूर

वही तप अमिऐ नरों के दुख को।पृष्ठ 105 सप्तम सर्ग

कवि ने वैराग्य को महत्व नहीं दिया है-

ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य है, कुछ भी नहीं गगन में,

धर्मराज! जो कुछ है, वह है मिट्टी में जीवन में ।पृष्ठ123 सप्तम सर्ग

“भोगो तुम इस भाँति मृत्ति को, दाग नहीं लग पाये,

मिट्टी में तुम नहीं, वही तुममें विलीन हो जाये ।पृष्ठ 124 सप्तम सर्ग

इस सांसारिक जीवन में ही सुख और दुख संभव है।इसलिए परलौकिक सुख की कल्पना में भटकते रहना व्यर्थ है। इसी संसार को सुखी और शांतिपूर्ण बनाने की आवश्यकता है।

*****